2017 - 18

MAHAMUL03014/13/1/2012-TC
Special Issue No. 1, March 2018

ISSN : Online : 2320-8341
Print : 2320-6446

RESEARCH FRONT

An International Multidisciplinary Research Journal

Social and Economic Justice- Past, Present and Future

Prin. Dr. C. J. Khilare
Chairman

Mr. S. M. Mahajan
Editor

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

EDITORIAL BOARD

Prin. Dr. C.J. Khilare
Chairman

Mr. Mahajan S. M.
Editor

Mr. B.R. Nadaf – Member

Smt. S. J. Mane – Member

Mr. G.S. Bansode – Member

Dr. Mrs. B.S. Puntambekar – Member

Mr. R.V. Kumbhar – Member

Dr. Mrs. M.B. Desai – Member

Mrs. M.K. Kannade – Member

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

23	Pre-Primary Education And Justice For Anganwadi Workers **Prof. Mrs. Shamala R. Mane**	110-113
24	Effect of Family Type And Gender on Emotional Maturity Among Undergraduate Students **Prof. Pramila A. Surve, Prof. Ramesh S. Kattimani**	114-118
25	Consumer And Consumer Protection Act ,1986 : Issues And Challenges **Smt. Sampada S. Lavekar**	119-123
26	Gender Inequality In India **Prof. Shobha Sambhoji**	124-125
27	हिंदी साहित्य में अभिव्यक्ति स्वातत्र्य **श्री काकासाहेब वापूसाहेब भोसले**	126-127
28	कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी के 'युधिष्ठिर' उपन्यास में प्रतिबिंबित धार्मिक एवं न्यायिक यथार्थता **देवकाते भागवत भगवान**	128-131
29	चित्रा मुद्गल के 'प्रतिनिधि कहानियों' में ग्राम्य और शहरी जीवन के विषमता का यथार्थ दर्शन **कांवळे श्रावण आवा**	132-134
30	नागार्जुन के काव्य में युगीन विषमता और सामाजिक आस्था एवं विश्वास के स्वर **लेफ्टनंट डॉ.रविंद्र पाटील**	135-137
31	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर याची सामाजिक विकासाची मीमांसा **प्रा. डॉ. वासुदेव डोंगरदिवे**	138-146
32	महिला आरक्षणाचे राजकारण आणि स्त्रियांचा राजकीय सहभाग-समतेच्या संदर्भात **प्रा. सौ. सुपेकर व्ही. पी.**	147-150
33	'मूलभूत हक्क आणि सामाजिक न्याय' **प्रा. सुहास निर्मले**	151-153
34	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि पुणे करार : एक चिकित्सक अभ्यास **डॉ. विनोद संभाजी सोनबणे**	154-157
35	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान : 'स्त्री' च्या सामाजिक न्यायासाठी **डॉ. श्रीमती सिंधू जयवंत आवळे**	158-160
36	'राजा राममोहन रॉय यांनी सतेप्रथेविरूध्द मिळविलेला न्याय' **प्रा. डॉ. संतोष तुकाराम कदम**	161-164
37	महिलांना समान न्याय व पंचायत राज्यातील त्यांचे योगदान **प्रा. भाऊसाहेब खंडू सांगळे**	165-167
38	पंचायतराज व्यवस्थेमधून महिला सबलीकरण : एक सामाजिक न्याय प्रक्रिया **प्रा. सचिन शंकर ओवाळ**	168-170
39	भारतातील लिंग आधारित भेदभाव आणि न्याय **प्रा. रावसहेब सटवा कांबळे**	171-175
40	हिंदू स्त्रियांचे वैवाहिक हक्क आणि न्याय'' **प्रा. रजनी कारदगे**	176-178
41	मानवी हक्क आणि शिक्षण **प्रा. अडसरे व्ही. बी.**	179-181
42	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक न्याया बावतचे विचार **प्रा. नदाफ बी. आर.**	182-183
43	आर्थिक कल्याण : सामाजिक न्यायाचा आधार **कुबेर दिनकर दिंडे**	184-187
44	विचारेमाळ झोपडपट्टीतील बालकामगार आणि सामाजिक न्याय **प्रा. कन्नाडे ममता कार्तिक**	188-191
45	शिवकालीन न्यायव्यवस्था **प्रा. डॉ. चंद्रकांत गिरी**	192-195
46	शिक्षणाचा अधिकार **प्रा. डॉ. गावडे एस. एम.**	196-201
47	अहमदनगर जिल्हयातील कम्युनिस्ट पक्षाचे जायकवाडी धरणग्रस्तांच्या लढयातील योगदान **प्रा. विधाटे गणेश शंकर**	202-208
48	पांगिरे प्रकरण (काशीबाई हणबर) **प्रा. डॉ. कोळसेकर मनोहर सुबराव**	209-210
49	शिक्षणाचा मुलभूत अधिकार आणि बालक हक्क धोरण **श्री अजितकुमार भिमराव पाटील**	211-220
50	स्त्रीः ''धर्म आणि न्याय'' **प्रा. डॉ. नंदिनी रविंद्र रणखांबे**	221-223
51	सामाजिक सुधारणा चळवळीचे अग्रदूत जगन्नाथ शंकरशेट **प्रा. उमेश गणेशराव जांभोरे**	224-227
52	जागतिकीकरण व न्यायः काही निरीक्षणे **प्रा. टी. वाय.रणदिवे**	228-230

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

नागार्जुन के काव्य में युगीन विषमता और सामाजिक आस्था एवं विश्वास के स्वर

लेफ्टनंट डॉ.रविंद्र पाटील
राजर्षे छत्रपति शाहू कॉलेज,
कोल्हापुर
मो.नं. 95 52 56 42 48

आधुनिक हिंदी कवियों में नागार्जुन का अपनी स्थान है। नागार्जुन का कवि व्यक्तित्त्व उनकी रचनाओं में संपूर्ण रूप से निखर उठा है। कवि कभी व्यंग्यकार के रूप में, कभी प्राकृतिक प्रेमी के रूप में, और कभी सामाजिक आस्था, विश्वास और दृढता के स्वरों को उच्चरित करनेवाले समाजचेता कलाकार के रूप में अपने दर्शन देता है।

"कवि नागार्जुन प्रगतिवाद के उन कवियों में है जिन्हें देश और जनता से असीम प्रेम है। इसकी अभिव्यक्ति उक्त दोनों ही रूपों में उनकी रचनाओं में मिलती है। प्रथम रूप में वह अपने हृदय की कोमल मार्मिक अनुभूतियों को प्रकट करता है, अपने दूसरे रूप मे वह व्यंग्य का अस्त्र ग्रहण कर सामाजिक विषमताओं और विकृतियों को समाप्त करना चाहता है जो समाज की प्रगति में बाधक कही जा सकता है।"[1]

नागार्जुन के काव्य में संपूर्ण देश का दर्द और दुख साकार हो उठा है। **'सतरंगे पंखो वाली'** संग्रह की **'देखना ओ गंगा मैया', 'खुरदुरे पैर'**, इसी प्रकार की ग्रामीण एवं नागरिक जीवन की विषमताओं को उद्घाटित करती है। विवेच्य कविता में कवि ने मल्लाहों के वैषम्यपूर्ण जीवन को चित्रित किया है। जिनके वस्त्रहीन बच्चे पानी में कुछ पैसों को खोजने के लिए खडे रहते हैं इस प्रतीक्षा में कि संभवतः वे उन्हें प्राप्त हो जाय। कवि इन भावों को व्यक्त करते हुए लिखते हैं,

"मलाहों के नंग धडंग छोकरे
दो दो पैर
हाथ दो दो
प्रवाह में खिसकती रेन की ले रहे छोद
बहुधा अवरित चतुर्भज नारायण ओह
खोज रहे पानी में जाने कौस्तुभ मणि।"[2]

कवि ने नागरिक जीवन के वैषम्य से संबंधीत विषय को भी काव्य का माध्यम बनाया है। जहाँ उन्होंने **'खुरदरे पैर'** शीर्षक कविता में रिक्तेवाले के जीवन की झाँकी प्रस्तुत किया है वहीं दूसरी ओर **'प्यासी पथराई आँखे'** काव्य संग्रह की **'आदम का तबेला'** कविता में कलकत्ते के मध्यवर्गीय परिवार के दयनीय चित्रों को प्रस्तुत किया है,

"पितरों की प्यासी रूहें ।
अंगूठा चूसती है नवजात बच्ची
खिडकी से लटका दिया गया है लाल खिलौना।"[3]

कवि नागार्जून के मन में उपेक्षित तथा पीडित जनसमुदाय के प्रति गहरी सहानुभूति है। कवि उनके दुःख और पीडा को अपना ही समझते हैं। कवि ने कुछ कविताओं में अपने ही संघर्षमय जीवन को चित्रित किया है। **'युगधारा'** कविता में इसका यथार्थ अंकन हुआ है। कवि सामाजिक विषमता के लिए सब से बडा कारण पूँजीवादी सभ्यता और संस्कृति को मानते हैं। पूँजीपतियों द्वारा किए गए कृषकों पर अत्याचारों से कवि दुःखी है। शोषित वर्ग के प्रति कवि के मन में सहानुभूति की भावना कुटकुटकर भरी हुई है। **'सच न बोलना', 'रामराज'** आदि कविताओं में यह परीदृश दिखाई देता है।

"जमीदार है, साहुकार है बनिया है, व्यापारी है,
अंदर–अंदर विकट कसाई, बाहर खद्दरधारी है।
सब घुस आये, भरा पडा है भारत माता का मंदिर
एक बार जो फिसले अगुआ, फिसल रहे हैं फिर फिर फिर।"[4]

नागार्जुन ने राजनेता और पूँजीपतियों पर खुलकर प्रहार किया है। वे कहते है कि राजनेता और पूँजीपतियो के बीच सांठगांठ है। इस प्रसंग का चित्रण करते हुए लिखते हैं,

"खादी ने मलमल से अपनी सांठगांठ कर डाली है।

(Print) 2320 - 6446, (Online) 2320 -

बिरला, टाटा, डालमिया की तीसो दिन दिवाली है।
और जुलुम की आँधी चलती बोल नहीं कुछ सकते हो।
समझ नहीं पाता हूँ कि हुकूमत गोरी है या काली है।"[5]

कृषक वर्ग के अलावा समाज के अन्य उपेक्षित वर्ग के प्रति भी नागार्जुन के मन में सहानुभूति की भावना दिखाई देती है। 'धिन तो नहीं आती है, शीर्षक कविता में श्रमिक के जीवन को कवि ने रूप से आँकने का प्रयास किया है। दिन रात निरंतर परिश्रम करने पर भी मजदूरों को उचित मजदूरी नहीं मिलती है। इस प्रसंग का वर्णन करते हुए लिखते हैं,

"कुली मजदूर है
बोझा ढोते हैं खींचते हैं ठेला
धूल धुँआ–भाप से पडता है सबका
थके मां दे जहाँ तहाँ हो जाते हैं ढेर
सपने में भी सुनते हैं धरती की धडकन ।"[6]

- **आस्था एवं विश्वास के स्वरः–**

नागार्जून ने केवल भारतीय जनता के दुःख और वैषम्यों के स्वरों को ही अपने काव्य में चित्रित नहीं किया हैं, अपितु आस्था, विश्वास तथा नए संकल्पो को लेकर एक प्रखर और क्रांतिकारी व्यक्तित्व का भी परिचय दिया है। कवि जन–जीवन की आशाओं और स्वप्नों को मूर्तिमान करना चाहता है। **'सतरंगे पंखो वाली'** काव्य संग्रह में आशा और स्वप्नों के ओजस्वी स्वर नजर आते हैं। इस संग्रह के **'तुम किशोर तुम किरण', 'यह कैसे होगा', 'हरे दनुजदल मिटे अमंगल'** आदि कविताएँ आशा एवं नए संकल्पों से परिपूर्ण है।

'तुम किशोर तुम तरूण' नव युवकों को देश के भावी निर्माण का कर्ता कहा है। कवि युवकों से संघर्ष और बाधाओं को सहन करने की शक्ति के लिए आग्रह करते है,

"तन जर्जर है भूख प्यास से
व्यक्ति–व्यक्ति दुख दैन्य ग्रस्त है
दुविधा में समुदाय पस्त है
लो मशाल, अब घर घर को आलोकित कर दो,
सेतू बनो प्रज्ञा–प्रयत्न के मध्य
शांति को सर्वमंगला हो जाने दो।"[7]

कवि नागार्जुन काव्य पंक्तियों के माध्यम से लोककल्याण और लोकमंगल की आशा व्यक्त करते हुए लिखते हैं,

'पुलकित तन हो
मुकलित मन हो
सरस और सक्षम जीवन हो
फिर न युद्ध हो
गति न रूद्ध हो
निर्भय निरांतक यौन हो।"[8]

इसके अलावा **'हटेदनुजदल मिटे अमंगल'** तथा **'प्यासी पथराई आँखे'** संग्रह की **'मेरी भी आभा है इसमे'** आदि कविताओं में लोककल्याण और लोकमंगल के ओजस्वी स्वर दिखाई देते हैं। कवि आशावादी है अब उनको पूर्ण विश्वास है क्योंकि अब समय बदल चुका है। नौकरशाही और जमीनदारियाँ खत्म हो चूकी हैं। कृषकों पर जमीदारों द्वारा होनेवाले अत्याचार खत्म हो जाएँगे। किसानों को अपनी–अपनी भूमि मिलेगी जिससे सुख और समृद्धि लौट आएगी। **'लाल भवानी'** शीर्षक की कविता मे नवीन संकल्पों को वाणी मिलती है,

"सेठ और जमींदारों को नहीं मिलेगा एक छदाम,
खेत खान–दूकान मिले सरकार करेगी दखल तमाम
खेत मजूरों और किसानों जमीन बंट जायेगी,

ISSN (Print) 2320 - 6446 (Online) 2320 - 8341

नहीं किसी कमर के सिर पर बेकारी मंडरायेगी
नौकरशाही का यह रद्दी ढाँचा होगा चूरम चूर,
सुफला के गायेंगे गीत प्रसन्न किसान मजूर।"[8] 'सुजला

अतः निष्कर्षतः कह सकते है कि जन कवि नागार्जुन में देश और जनता के प्रति असीम प्रेम है। काव्य में उन्होंने एक और अपने हृदय की कोमल मार्मिक अनुभूतियों को प्रकट किया है, दूसरी ओर व्यंग्य का अस्त्र ग्रहण करके सामाजिक विषमताओं और विकृतियों पर कडा प्रहार किया है।

कवि नागार्जुन ने न केवल भारतीय जनता के दुःख और वैषम्यों के स्वरों को अपने काव्य में प्रतिध्वनित नहीं किया है अपितु आस्था विश्वास तथा नए संकल्पों को लेकर एक प्रखर और क्रांतिकारी व्यक्तित्व का भी परिचय दिया है।

संदर्भ संकेतः–

1) डॉ.शिवकुमार मिश्र, नया हिंदी काव्य, पृष्ठ 187
2) नागार्जुन, सतरंगे पंखोंवाली, पृष्ठ 19
3) नागार्जुन, प्यासी पथराई ऑखे, पृष्ठ 18
4) हंस, जून, 1948 अंक–1 पृष्ठ 18
5) हंस, मई, 1949 अंक – 8, पृष्ठ 492
6) नागार्जुन, प्यासी पथरायीं ऑखे, पृष्ठ 28
7) नागार्जुन, सतरंगे पंखोंवाली, पृष्ठ 28
8) हंस, अप्रैल, 1948 अंक – 7